बदलती राहें

Gunjan

वर्ष 01, अंक 14

धर्मशाला, सोमवार, 01 जून 2015

सफल नशानिवारण कैंप के आयोजन को अपनाएं ये छह तरीके

जैसा की हम जानते हैं कि भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में शराब का नशा एक गंभीर समस्या बन चुकी है। यह न केवल जन स्वास्थ्य से जुड़ा मुद्दा है बल्कि एक सामाजिक समस्या भी है। इससे भारतीय ग्रामीण समाज का अर्थशास्त्र तो प्रभावित होता ही है, साथ में स्वास्थ्य संबंधि परेशानियां भी पैदा होती हैं। इसका प्रभाव देश के हालात पर भी पड़ना स्वभाविक है। जहां इसके कारण पैदा होने वाली मानसीक विमारियां आत्महत्या के रूप में सामने आते हैं, वहीं चोरी व अपराध बढ़ने जैसी सामाजिक समस्याएं भी पैदा होती हैं। दूसरी ओर लड़ाई-झगड़ों के कारण परिवार टूटते हैं और बेरोजगारी, अनपढ़ता व गरीबी सिर उठाने लगती है।

ऐसे में शराब के नशे को एक गंभीर बीमारी के तौर पर देखा जाता है। इसका इलाज तो संभव है, मगर इसके लिए मरीज को मानसीक, आर्थिक व सामाजिक तौर पर पूरी तरह तैयार करना पड़ता है। शहरों में तो नशा निवारण केंद्र लोगों को इस बीमारी के इलाज की सुविधाएं प्रदान कर रहे हैं, मगर पेंचिदा व विभिन्नता वाले ग्रामीण परिवेश में ऐसे केंद्र खोलना काफी मुश्किल काम है। इसके लिए एक ही उपाय कारगर साबित हुआ है और वह है नशानिवारण कैंपों का आयोजन करना। इन कैंपों के जरिए समाज में जागरूकता फैलाने के साथ ही मरीजों को उनके घर-द्वार पर सुविधाएं देकर इस समस्या का कुछ हद तक समाधान संभव है। अगर कैंपों का आयोजन बड़े पैमाने पर किया जाए तो इसके काफी सकारात्मक व चौकाने वाले परिणाम सामने आ सकते हैं। कैंपों के आयोजन की सफलता को लेकर किए गए अब तक के शोध व प्रयास बताते हैं कि कैंप कम खर्चीले व सुविधाजनक माध्यम हैं।

- रूरल कैंपों के जरिये शराब के नशे की बीमारी का इलाज कारगर
- अब तक के प्रयासों से सामने आएं हैं संतोषजनक नतीजे

इस संबंध में टीटीके अस्पताल के चिकित्सें स्थित एडिक्शन ट्रिटमेंट सेंटर की ओर से जुटाई गई जानकारी कैंपों के आयोजन में कारगर साबित हो सकती है। यह जानकारी इस प्रकार से है:-

कैंप के स्थान का चयन

कैंप शुरू करने से चार माह पहले इलाज करने वाली टीम की जिम्मेवारी कैंप के लिए जगह का चयन करना होती है। पहले कैंप साइट सेलेक्ट की जाती है। फिर मेजबानी करने वाली संस्था का चयन किया जाता है। इस संस्था को कैंप का संचालन करने के लिए तैयार किया जाता है। फिर समाज में इस कैंप को लेकर जागरूकता फैलाई जाती है। लोगों को बताया जाता है कि शराब की लत के क्या दुष्परिणाम होते हैं। इस बीमारी का इलाज संभव है और इलाज करवाने वाले व्यक्ति के लिए सहायता भी मुहैया रहती है। इसमें मेजबान संस्था की ओर से कैंप के प्रति जागरूकता फैलाने के लिए पंफलेट्स/पर्चे बांटे जाते हैं। यह सारा कार्य कैंप आयोजित किए जाने के चार माह पहले ही किया जाता है।

तैयारी करना

मेजबान संस्थान को कैंप की व्यवस्था करने के अनुकूल बनाने के लिए ट्रेनिंग दी जाती है। इसके तहत मेजबानी करने वाले संस्थान को मरीजों की पहचान करने, उन्हें कैंप में भाग लेने के लिए प्रेरित करने और मरीजों का चयन करने से संबंधित जरूरी प्रशिक्षण दिया जाता है। साथ ही कैंप के स्थान का भी चयन कर लिया जाता है। इसके बाद संस्थान जुटाए जाते हैं। मसलन चिकित्सा अधिकारी, इमरजेंसी केयर सर्विसिज और लोगों के साथ काम करने के लिए कम्युनिटी वर्कर की व्यवस्था की जाती है। यह काम भी चार माह पहले ही निपटाया जाता है। यह कार्य ट्रिटमेंट टीम ही करती है।

मरीजों का चयन करना

मरीजों का चयन करते समय पहले बीस मरीजों की पहचान करके आगामी जांच के लिए इनका चयन किया जाना चाहिए। फिर डाक्टर द्वारा इनका आकलन और मेडिकल चेकअप किया जाता है। फिर क्लोडाइजीपीक्साइड का प्रबंधन किया जाता है। मरीज को मजबूती से इलाज के लिए प्रेरित किया जाता है। साथ ही यह बात भी पुख्ता कर ली जाती है कि इस प्रक्रिया में मरीज के परिवार की भी सहभागिता रहेगी। यह काम कैंप लगाने के तीन माह पूर्व किया जाता है। यह कार्य ट्रिटमेंट टीम ही करती है। इसके अलावा मेजबान संस्था की ओर से भी मदद की जाती है। मेजबान संस्थान पहले चयनित मरीज और उसके परिवार को इलाज के लिए प्रेरित करता है और फिर लोकल चिकित्सक से उसका मेडिकल चैकअप भी करवाया जाता है। मरीज की मेडिकल समस्याओं से निपटा जाता है।

कैंप का आयोजन

कैंप का आयोजन 15 दिन के लिए चयनित किए गए 20 मरीजों के लिए किया जाता है। मरीज के घर में ही डिटाक्सीफिकेशन यानि नशे के कारण उसके शरीर मौजूद टाक्सीक या विष का इलाज किया जाता है। फिर उसका मनोवैज्ञानिक उपचार किया जाता है। उसके परिवार व सहायक व्यक्ति के लिए भी अलग से कार्यक्रम आयोजित किया जाता है। इसमें परिवार के सदस्यों को जरूरी हिदायतें दी जाती हैं। स्पोर्ट पर्सन यानि सहायक व्यक्ति को भी जरूरी जानकारी मुहैया करवाई जाती है, ताकि मरीज का फालोआप जारी रखा जा सके। इसके बाद केस हिस्ट्री के लिए कागजी कार्रवाई पूरी की जाती है। यह कार्य मेडिकल टीम ही करती है।

दूसरी ओर मेजबान संस्थान की ओर से कैंप के लिए जरूरी साजोसामान मुहैया करवाया जाता है। कैंप के दौरान स्थानीय चिकित्सक की मौजूदगी भी सुनिश्चित की जाती है। इमरजेंसी सेवाओं की उपलब्धता पक्की की जाती है। रोजाना की गतिविधियों, जैसे दूध व सब्जियां लाने व अन्य प्रकार की सहायता के लिए स्वयंसेवियों की व्यवस्था भी मेजबान संस्थान ही करता है।

कैंप के बाद फालोअप स्पोर्ट

नशानिवारण कैंप का आयोजन करने के बाद मरीजों के फालोअप व जरूरी सहायता के लिए फालोअप स्पोर्ट की आवश्यकता होती है। इलाज के बाद मरीज में होने वाले सुधार का मूल्यांकन करने के लिए छह माह तक उस पर नजर रखनी पड़ती है। चिकित्सा मुहैया करवाने वाले संस्थान की ओर से एक साल समाप्त होने पर कैंप की सफलता का जश्न मनाया जाता है। यह जश्न उन मरीजों के लिए होता है, जो इलाज के बाद एक साल परहेज करने में कामयाब रहे हैं और उन मरीजों को ठीक होने में सहायता कर रहे हैं, जो इलाज के बाद फिर से इस बीमारी का शिकार हो गए थे।

वहीं मेजबान संस्थान की ओर से कैंप के बाद हर माह फालोअप मीटिंग आयोजित की जाती है। साथ ही मरीजों के घरों में जाकर उनका हालचाल पूछा जाता है। उनको इलाज के दौरान नशे से दूर रखने के लिए प्रेरक परामर्श दिया जाता है। साथ ही इलाज करने वाले संस्थान को समय-समय पर मरीजों की स्थिति की जानकारी दी जाती है। मेजबान संस्थान समाज में जागरूकता फैलाने वाले कार्यक्रम जारी रखता है।

सहायता के हाथ बढ़ाए रखना

इलाज करने वाले संस्थान को इस बात का खास ख्याल रखना होता है कि जिस जगह कैंप का आयोजन किया जा चुका है, वहां दोबारा कैंप लगाया जाए। ऐसा एक साल की समाप्ति पर किया जा सकता है। पहले कैंप की सफलता के चलते यहां लोगों में खासा उत्साह व प्रेरणा होती है। ऐसे में यहां अन्य 20 मरीजों का चयन करके पहले की ही तरह दूसरा कैंप आयोजित किया जाना चाहिए। इन मामलों में चिकित्सा संस्थानों व स्वयंसेवी संस्थाओं को अपना सहायता का हाथ हमेशा आगे बढ़ाए रखना पड़ता है।

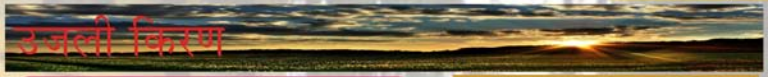

एचआईवी ग्रस्त विद्या ने साहस से लड़ी जीने की जंग

- मुंबई में चालक पति ऐसी बीमारी लाया, जो उसे लील गई
- बाद में विद्या भी हो गई थी एचआईवी का शिकार
- दो बच्चों के पालन-पोषण के लिए किए कड़े जतन

जिला कांगड़ा के एक गांव की निवासी विद्या (काल्पनिक नाम)के ड्राइवर पति को एक ऐसी बीमारी ने जकड़ लिया था, जिसका इलाज संभव नहीं था। मुंबई में काम करने वाले बाकी चालकों की तरह ही विद्या के पति ने भी असुरक्षित योन संबंधों की चेतावनी को अनदेखा कर दिया था। इसका परिणाम यह हुआ कि वह खुद तो एचआईवी से ग्रसित हुआ ही, अपने परिवार को भी मुसीबत में डाल कर चल बसा। उसके पीछे उसकी पत्नी व दो बच्चे जीने का संघर्ष करते बाकी रह गए थे।

विद्या बताती है कि वर्ष 1995 में उसकी शादी पालमपुर उपमंडल के एक गांव में हुई। उसका पति मुंबई में ड्राइवर था। वह वहां गाड़ी चलाता था, मगर वह कभी भी मुंबई नहीं गई। वह अपने ससुराल में ही काम काज में लगी रहती थी। उसके दो बच्चे भी हैं। वह अपने बच्चों के पालन-पोषण व घर के काम काज में व्यस्त रहती थी। ऐसे ही उसके वैवाहिक जीवन के आठ साल पूरे हो चुके थे। उसके पति उसे जितना खर्च भेजते, उसी में गुजारा कर लेती। उसे घर के बाहर जाने से रोका जाता था, मगर वह इसी में खुश थी।

इस बीच वर्ष 2003 को अचानक उसके पति बीमार हो गए। विद्या नहीं जानती थी कि उसके पति को कौन से बीमारी लगी है। वह समझती रही कि उसके पति को वैसे ही सिर दर्द हो रहा होगा और इस वजह से उनमें कमजोरी आ रही होगी। मुंबई व पालमपुर में इलाज करवाया, मगर बात न बनी। इंजेक्शन लगने के बाद टीक तो हो जाते, मगर फिर बीमार हो जाते। एक बार तो वह 15 दिन तक लगातार बीमार रहे। विद्या को कुछ समझ नहीं आ रहा था कि उसके पति को कौन सी बीमारी लग गई है। उसने अपने भाई व भाभी को बुलाया, तो उन्होंने भी एक डाक्टर को दिखाया। डाक्टर ने उन्हें इंजेक्शन व दवाई दी और कहा कि टांडा में चैकअप करवा लो। वे उसे टांडा लेकर जाते, इससे पहले ही विद्या के पति ने दम तोड़ दिया।

विद्या अभी भी इस बात से अनजान था कि उसके पति की मौत कैसे हुई है। उस पर तो अपने बच्चों के पालन-पोषण की जिम्मेवारी थी। उपर से पति की मौत का सदमा। विद्या बताती है कि पति की मौत के बाद लोगों का आचरण भी बदल गया। वह किसी के घर में कुछ बात करने जाती, तो भी वे यह समझने लगते कि वह कुछ

मांगने आई है। एक दिन जब वह पानी भरने गई तो वहां मौजूद गांव की औरतों ने उसे कहा कि तू अपना टैस्ट करवा ले, पता नहीं तुझे क्या बीमारी है। विद्या इस टैस्ट नाम को बला के बारे कुछ नहीं जानती थी। इस पर उसने महिलाओं से पूछा कि कैसा टैस्ट करवाऊं, तो उन्होंने उसे बताया कि गांव के चार लोग मुंबई में ही ड्राइवर थे। वे मर चुके हैं और उनमें से एक की पत्नी की भी मौत हो गई है। उन्होंने विद्या को समझाया कि उसके पति की भी अचानक मौत हुई है, लिहाजा वह अपना एचआईवी टैस्ट करवा ले। इस बात का विद्या को बुरा लगा। विद्या एक दिन डिस्सैंसरी गई थी, तो वहां भी नर्स की मौजूदगी में कुछ महिलाओं ने उसे टांडा में जाकर टैस्ट करवाने की बात कही। इस पर नर्स ने उन्हें डांटा और कहा कि अगर उन्हें इतनी ही आशंका है, तो वे टैस्ट के लिए पैसे एकत्रित करके इसे दे दो। इस बात पर उन्होंने मना कर दिया। नर्स ने विद्या को इस बारे में सारी बातें समझाईं और बताया कि क्यों टैस्ट जरूरी है। फिर विद्या अपने भाई व भाभी के साथ टांडा गई और एचआईवी टैस्ट करवाया तो वह रिपोर्ट नेगेटिव आई। यह जान कर वह बहुत खुश हुई। उसे लगा कि अब गांव में कोई उसे तंग नहीं करेगा। इसके बाद वह घरों में काम करके गुजारा करने लगी। फिर आंगनबाड़ी में हैल्पर के पद पर रख ली गई।

विद्या ने बताया कि अचानक दस साल बाद उसे टीयी हुई, तो टांडा में फिर से उसका एचआईवी टैस्ट किया गया। इसमें वह पाजिटिव पाई गई। अबकि बार उसके पैरों तले से जमीन निकल चुकी थी। उसके मौत का भय सताने लगा। इसके बाद उसने अपने दोनों बच्चों का भी एचआईवी टैस्ट करवाया, मगर इस बार उसे खुशी देने वाली खबर मिली थी। उसके दोनों बच्चे एचआईवी नेगेटिव पाए गए। इससे उसे कुछ राहत मिली और वह अपना गम भूल गई। उसने अपने बच्चों के लिए जीने की ठान ली। दवाई लेने के कारण उसका स्वास्थ्य सुधरने लगा। उसने अपने बच्चों को यह नहीं बताया था कि वह यह दवाई क्यों खाती है। एक दिन जब उसके बच्चों ने पूछा कि वह हर रोज किस बीमारी की दवा खाती है, तो उसने उन्हें बताया कि उसे कौन सी बीमारी है। साथ ही उसने बच्चों को हिदायत दी कि यह बात बाहर किसी से न कहें।

विद्या ने बताया कि उसके जीजा भी एचआईवी पाजिटिव हैं। वह एआरटी में जाकर अपने साथ ही अपने जीजा की दवा भी लेकर आती है। इस बीच यहां तैनात स्टाफ में से किसी ने पूछ लिया कि आपके जीजा भी एचआईवी पजिटिव हैं और आप भी। कहीं आपके आपसी संबंध तो नहीं, इस पर विद्या ने बिना सहमे जवाब दिया कि ऐसी बात नहीं है। उसने अपने जीवन में एक ही व्यक्ति से संबंध रखा था। विद्या बताती है कि किस तरह लोग एचआईवी प्रभावित को बूरी नजरों से देखते हैं। यह बात उसने कम्युनिटी स्पोर्ट सेंटर के काउंसलर से की। उसने विद्या को समझाया कि यह सोच उनकी अपनी निजी सोच है। लिहाजा व्यक्ति अपने काम से नहीं अपने आचरण से बड़ा होता है। सो वह इन बातों का बूरा न माने और अपने लक्ष्य की ओर ध्यान दे। साथ ही उसने किसी प्रकार की मदद में पूरी सहायता का भी आश्वान दिया। विद्या ने बताया कि उसने काउंसलर विजय को अपने बच्चों की सहायता करने को कहा है। इस पर उसने मदद का आश्वासन दिया है और सरकार से जरूरी आर्थिक मदद दिलवाने की भी बात कही है। विद्या ने बताया कि उसके बूरे समय में उसके भाई-भाभी और माता-पिता ने पूरा साथ दिया। इसके अलावा पंचायत प्रधान व डिस्सैंसरी की नर्स ने भी उसका हौसला बढ़ाते हुए हर प्रकार की मदद की। साथ ही गुंजन संस्था ने उसे कम्युनिटी स्पोर्ट सेंटर से सहायता दिलवाई। विद्या ने गुंजन की काउंसलर रजनी का भी आभार व्यक्त किया है।

एम्स में निकाला दुनिया का सबसे बड़ा किडनी ट्यूमर

नई दिल्ली । अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) के डॉक्टरों ने दुनिया का सबसे बड़ा किडनी ट्यूमर निकालने में कामयाबी पाई है। एम्स के डॉक्टरों का दावा है कि इस किडनी ट्यूमर का वजन 5.018 किलोग्राम है, जो अब तक निकाले गए सभी ट्यूमर से बड़ा है। यह ट्यूमर साइज में इतना बड़ा था कि यह किडनी से होते हुए लंग्स तक पहुंच गया था। लेकिन डॉक्टरों ने ओपन सर्जरी कर इस किडनी ट्यूमर को निकाल दिया है। हाल ही में गंगाराम अस्पताल में किडनी ट्यूमर निकाला गया था, जिसका वजन 2.75 किलोग्राम था।

बिहार के दरभंगा निवासी के. एल. दास (66) के पेट के दाहिने हिस्से में यह ट्यूमर था। ट्यूमर की वजह से उन्हें पहले तो कोई परेशानी नहीं थी, लेकिन पेट के नीचे भारीपन था। पहली बार रूटीन चेकअप में तो उन्हें पता

नहीं चला कि ट्यूमर है, लेकिन जब सीटी स्कैन कराया तो पता चला कि ऐसा कोई ट्यूमर है। इसके बाद परिजन उन्हें इलाज के लिए एम्स लेकर पहुंचे, जहां शुरुआती जांच के बाद डॉक्टर ने सर्जरी करने का फैसला किया।

एम्स के ऑन्कोलॉजी सर्जन डॉक्टर एमडी रे ने बताया कि 20 गुणा 15 सेमी का एक बड़ा-सा ट्यूमर पेट के राइट साइड में था। यह इतना बड़ा था कि राइट किडनी को कवर करने के बाद लंग्स तक पहुंच गया था। अच्छी बात यह थी कि लंग्स में एक छोटा-सा टुकड़ा ही ट्यूमर का था। बड़ी सर्जरी थी, इसलिए पेट से लेकर थोरासिक यानि कि छाती तक चीरा लगाकर पूरी किडनी को एक साथ बाहर निकाला गया। सुबह 9 बजे सर्जरी की शुरुआत की गई और दोपहर बाद 2.30 बजे तक सर्जरी पूरी हो गई।

दिल के मरीजों के लिए मिनी पंप को मंजूरी

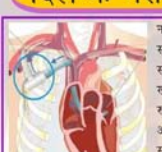

नई दिल्ली । अमेरिका के फूड ऐंड ड्रग ऐडमिनिस्ट्रेशन (एफडीए) ने ऐसे मिनी ब्लड पंप को मंजूरी दी है, जो दिल के रोगियों को नई जिंदगी दे सकता है। इस पंप के ट्रायल कामयाब रहे हैं। इसे इंपेला 2.5 सिस्टम नाम दिया गया है। इसका इस्तेमाल एंजियोप्लास्टी और दिल की धमनियों में स्टेंट डालने के दौरान खून के दौरे को सामान्य बनाए रखने में किया जाएगा। क्योंकि इस दौरान खून के दौरे में रुकावट आने पर पेशेंट की जिंदगी खतरे में पड़ सकती है। अमेरिका के साथ ही भारत में भी दिल के मरीजों की तादाद तेजी से बढ़ रही है। इसमें प्रमुख वजह दिल की धमनियों में रुकावट आना है, जो खानपान में लापरवाही और आरामतलब जिंदगी का नतीजा है। धमनियों में रुकावट बढ़ने पर एंजियोप्लास्टी के साथ ही आर्टरीज में स्टेंट डालने की जरूरत पड़ती है। कई मामलों में ओपन हार्ट सर्जरी करनी पड़ती है। ऐसे मामलों में दिल को पर्याप्त मात्रा में खून की सप्लाई बरकरार रखने में इंपेला सिस्टम ने कारगर तरीके से काम किया। इस पंप के बाजार में आने से भारत में भी दिल के रोगियों को फायदा होगा।

पथरी से बचना है तो खूब पीना पड़ेगा पानी

भारत में बहुत से लोगों को पथरी की बीमारी होती है। इसका सबसे बड़ा कारण है गर्मी। गर्मी आते ही पथरी की बीमारी के मामले 40 फीसदी तक बढ़ जाते हैं। शरीर में पानी की कमी, तापमान, आद्रता, डीहाईड्रेशन यह सभी पथरी की प्रॉब्लम को बढ़ाते हैं। भारत में 50 से 70 लाख लोग पथरी की बीमारी से ग्रसित हैं और 1000 में से 1 व्यक्ति को पथरी की बीमारी के कारण अस्पताल में भर्ती होने की आवश्यकता होती है। आइए बताते हैं कि गर्मियों में पथरी से कैसे बचाव करें :

1) पीएं भरपूर पानी: गर्मी में पथरी से बचने के लिए ज्यादा पानी पीना चाहिए। अगर आप हर दो घंटे में वॉशरूम नहीं जाते हैं तो इसका मतलब है कि आप ज्यादा मात्रा में पानी नहीं पी रहे हैं।

2) नींबू शरबत: गर्मी में ज्यादा से ज्यादा नींबू का शरबत पीयें। नींबू का शरबत पीने से पथरी होने की संभावना बहुत कम होती है। साथ ही पेट की गर्मी भी कम होती है। यह काफी फायदेमंद होता है।

3) सोडा से बनाएं दूरी: जिन पदार्थों में ऑक्सालेट को ज्यादा मात्रा होती है उनसे दूरी बनाएं। इनमें पीने का सोडा, आइस टी, चॉकलेट, रुबाब (एक प्रकार का फल), स्ट्रॉबेरीज और नट्स शामिल हैं।

4) कैफीन: चाय या कॉफी जैसे तरल पदार्थों से दूर रहें। अगर आप ऐसा सोचते हैं कि आप ज्यादा से ज्यादा तरल पदार्थ ले रहे हैं, तो यह गलत है। ज्यादा कैफीन के कारण डीहाईड्रेशन हो सकता है।

5) नमक कम: गर्मी में पथरी से बचने के लिए नमक कम खाएं। इसे रोजाना की आदत में शामिल करके कम से कम नमक खाना चाहिए क्योंकि यह पथरी में नुकसानदेह हो सकता है।

6) डॉक्टर से सलाह: अपने डॉक्टर से सलाह लीजिए। उन दवाइयों के बारे में पूछे जो आपको पथरी से बचाने में सहायक हों। इसमें वे दवाइयां आती हैं जो यूरीन में ऐसिड, अल्कली और सिस्टइन को नियोंत्रित करती हैं।

7) सही मात्रा में प्रोटीन: नॉनवेज जैसे मांस, अंडे और फिश (मछली) जैसे प्रोटीन वाले भोजन को कम खाएं। इनमें प्यूरीन्स होते हैं जो प्राकृतिक पदार्थ हैं और यह पाचन की प्रक्रिया में यूरिक ऐसिड में टूट जाते हैं।

एनजीओ को दी आनलाइन प्रोजेक्ट प्रपोजल की जानकारी

धर्मशाला। केंद्रीय सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय द्वारा गुंजन संस्था के सहयोग से संचालित रीजनल रिसोर्स ट्रेनिंग सेंटर सिद्धबाड़ी में प्रदेश भर के विभिन्न एनजीओज को आनलाइन प्रोजेक्ट प्रपोजल तैयार करने की ट्रेनिंग दी गई। इस तीन दिवसीय ट्रेनिंग प्रोग्राम का उद्देश्य एनजीओज को भारत सरकार की नशा निवारण, वृद्धावस्था व विकलंगता सहित अन्य योजनाओं के क्रियान्वयन व प्राजेक्ट की मंजूरी से जुड़ी अहम जानकारियां देना है। यह ट्रेनिंग निशुल्क दी जा रही है। इसमें प्रदेश के करीब दो दर्जन एनजीओ भाग लिया।

यह जानकारी देते हुए गुंजन के निदेशक संदीप परमार ने बताया कि इस दौरान इन एनजीओ का आनलाइन एप्लीकेशन अप्लाई करने की बारीक जानकारियां मुहैया करवाई गई हैं। साथ ही इन्होंने इस दौरान केंद्र सरकार को आनलाइन प्राजेक्ट प्रपोजल भी भेजे। इस ट्रेनिंग के चलते अब उन्हें इस कार्य के लिए न तो किसी एजेंट या दलाल की सहायता की जरूरत पड़ेगी और न ही किसी प्रकार की दिक्कत का सामना करना पड़ेगा।

इस अवसर पर न्यू चामुंडा पिकाल से पारस राम, प्रयास संस्था से धीरज रमोल, नव निर्माण कल्याण समिति से वीना कौंडल व सुषमा कुमारी, नारी शक्ति संगठन से बीएम दत्ता व रेणु कुमारी, वी केयर संस्था से ज्योति, समर्पण संस्था से अनीता शर्मा व स्वरूप सिंह, हिल्ली वेल्फेयर संगठन सुशील गौत्तम, नारी शक्ति संगठन से रेणु व दिव्या उपस्थित थे।

श्री विजय सांपला (राज्य मंत्री) केंद्रीय सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय, हिमाचल दौरे के दौरान पालमपुर में ।

आई० ई० सही० मेटिरियल डवेलप्मेंट – पोस्टर श्रृंखला